पाठ -१२ धुलाई कला

वस्त्र हमारे प्रतिदिन के जीवन का अभिन्न अंग हैं।ये हमारे व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाते हंैं। वस्त्र पहनने पर गंदे हो जाते हैं। उन पर धूल, पसीना व किसी चीज के दाग या धब्बे पड़ जाते हैं। वस्त्र कई प्रकार के होते हैं जैसे- सूती, ऊनी, रेशमी आदि। अतः इनकी धुलाई का तरीका भी अलग-अलग होता है। सभी वस्त्रों को एक ही प्रकार से धोने पर उनकी सुंदरता व टिकाऊपन कम हो जाती है। इनको धोते समय भिन्न-भिन्न विधियों का उपयोग किया जाता है ताकि उनका रंग व बनावट ठीक रहे तथा वे सुंदर दिखें।

वस्त्रों की धुलाई हम जल द्वारा करते हैं। जल के दो प्रकार होते हैं - कठोर जल व मृदु जल।

आइए जानें

मृदु व कठोर जल में अंतर

मृदु जल

- यह पीने में सादा (स्वाद रहित) होता है।
- वस्त्रों में साबुन लगाने पर झाग निकलता है।
- वस्त्र साफ धुलते हैं।

कठोर जल

- यह पीने में हल्का नमकीन या खारा होता है। जल में कैल्सियम और मैग्नीशियम की उपस्थिति के कारण जल कठोर हो जाता है।
- वस्त्रों में साबुन लगाने पर झाग नहीं निकलता है।
- वस्त्रों में हल्का पीलापन आ जाता है।

धुलाई कला से संबंधित जानकारी आप पिछली कक्षा में पढ़ चुके हैं। वस्त्र धोने से पूर्व उसमें लगे दाग-धब्बे को भी छुड़ाना आवश्यक है।

वस्त्रों पर सामान्य दाग-धब्बे छुड़ाने की विधि

1. स्याही के धब्बे-स्याही का दाग तुरंत साबुन तथा पानी से दूर किया जा सकता है। धब्बे पर नमक, नींबू का रस, खट्टा दही आदि लगा देना चाहिए। कुछ देर बाद वस्त्र को साबुन से अच्छी तरह

धो लेना चाहिए।

2. हल्दी के धब्बे-हल्दी का ताजा धब्बा, साबुन या कपड़े धोने का सोडा और गर्म पानी से धोने से छूट जाता है। पुराना धब्बा स्प्रिट में कुछ देर भिगोने से छूटता है।

3. रक्त के धब्बे-रक्त का ताजा धब्बा नमक लगाकर ठंडे पानी में धोने से छूट जाता है। सूती या लिनन के वस्त्रों को पानी में भिगोकर अमोनिया या हाइड्रोजन-पैरॉक्साइड लगाना चाहिए। फिर वस्त्र पर दो तीन बार साबुन लगाकर धोने से रक्त का धब्बा छूट जाता है।

4. चाय के धब्बे-यदि चाय में दूध मिला है, तो उसका धब्बा साबुन तथा पानी से छूट जाता है। यदि केवल लाल चाय (बगैर दूध की) का धब्बा हो; तो उसे गर्म पानी से छुड़ा लेना चाहिए।

5. पान के धब्बे-पान के धब्बे के लिए वस्त्र पर हरी मिर्च, कच्चा आलू या दही रगड़ना चाहिए।

6. तेल के धब्बे-तेल के धब्बे पर बेबी पाउडर डाल देना चाहिए। कुछ देर बाद पाउडर पूरे तेल को सोख लेते है।

वस्त्रों में कलफ लगाना

सूती वस्त्रों में कलफ लगाने के कई लाभ होते हैं जैसे-

- सूती कपड़ों में सख्ती व कड़ापन आ जाता है।
- कलफ से कपड़ों में चमक एवं नवीनता आ जाती है।
- कलफ लगाने पर कपड़ों की क्रीज़ अच्छी बनती है। कलफ वस्त्रों के धागों के बीच के स्थान की पूर्ति करता है। इसमें वस्त्रों पर धूल एवं गंदगी कम जमती है।
- प्रेस करने में आसानी रहती है।

आइए कलफ बनाना सीखें

कलफ बनाना

कलफ कई चीजों से बनाया जाता है जैसे अरारोट, साबूदाना, मैदा, चावल, गोंद आदि।

1. अरारोट का कलफ

सामग्री- अरारोट- 2 बड़ा चम्मच, पिसा सुहागा-आधा चम्मच, मोम-एक चैथाई चम्मच।

विधि

- एक बड़े बर्तन में अरारोट, सुहागा और मोम को लेकर एक बड़ा चम्मच ठंडा पानी डालिए।
- अब ऊपर से थोड़ा-थोड़ा उबलता पानी डालें तथा एक चम्मच से अरारोट चलाते रहें।

- जब घोल चमकदार पारदर्शी लेई के समान हो जाए तो समझना चाहिए कि कलफ तैयार हो गया।
- अब कपड़ों के अनुसार मोटे कपड़ों पर गाढ़ा व महीन कपड़ों पर पतला कलफ लगाइए।
- मैदे का कलफ भी आरारोट के कलफ की भांति बनाया जाता है।

2. साबूदाने का कलफ

सामग्री

साबूदाना 50 ग्राम, सुहागा आधा चम्मच, पानी 500 मिली।

विधि

- साबूदाने को थोड़े पानी में 15-20 मिनट भिगोइए।
- अब इसमें थोड़ा अधिक पानी डालकर आँच पर पकाइए।
- आँच कम रखें तथा घोल को चलाते रहें।
- जब दाने गल जाएं तो पिसा सुहागा मिला दें।
- अब घोल को पतले कपड़े से छान लें।
- यह कलफ काफी कड़ा होता है, अतः इसमें पानी डालकर पतला करके लगाएँ।
- साबूदाने के कलफ में मोम नहीं डालते हैं क्योंकि साबूदाना स्वयं चिकना होता है।

3. चावल का कलफ

सामग्री-चावल 2 बड़ा चम्मच, मोम- एक चैथाई चम्मच, सुहागा- आधा चम्मच।

विधि-चावल को लेकर उसको पीस लें। फिर उसे पतली छलनी से छानकर अरारोट के कलफ की तरह बनाएँ व लगाएँ।

कलफ के प्रकार

कुछ कपड़ों को अधिक तथा कुछ को कम कड़ा करने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार कड़ेपन की दृष्टि से कलफ निम्नवत् तीन प्रकार के होते हैं-

गाढ़ा कलफ

गाढ़ा कलफ तैयार करने में कम पानी डाला जाता है। इसका उपयोग अधिकतर मिलिट्री की ड्रेस पर, कमीज की कालर, नर्स की टोपी व बेल्ट आदि पर किया जाता है।

मध्यम कलफ

गाढ़े कलफ में दो गुना पानी डालकर मध्यम कलफ तैयार किया जाता है। इसे सूती साड़ियाँ, कमीज, फ्रॉक, कुर्ता, स्कर्ट आदि पर लगाते हैं।

पतला कलफ

गाढ़े कलफ में चार गुना पानी डालकर पतला कलफ तैयार किया जाता है। इसे महीन कपड़ों, चादरों आदि पर लगाया जाता है।

नील का प्रयोग

सूती सफेद वस्त्रों को धोने के बाद उसमें चमक लाने के लिए नील का प्रयोग किया जाता है।

नील लगाने से लाभ

- सफेद वस्त्रों का पीलापन दूर होता है। इन वस्त्रों में सफेदी आ जाती है।
- कपड़ों में चमक आ जाती है।

वस्त्रों में नील कैसे दें ?

सर्वप्रथम एक चैड़े बर्तन में इतना पानी लीजिए कि वस्त्र अच्छी तरह से डूब जाए। एक सफेद कपड़े में नील को बाँधकर पोटली बना लीजिए तथा पानी में डुबोकर गोल-गोल घुमाइए। पोटली में से छनकर नील पानी में घुल जाएगी। पाउडर नील के स्थान पर आजकल नील तरल रूप में भी आता है जिसकी 3-4 बूदें पानी की बाल्टी में डाली जाती है। पाउडर के स्थान पर हम इसका भी प्रयोग कर सकते हैं। इसके बाद गीले वस्त्र को खोलकर झटक दें। अब उस वस्त्र को नील घुले पानी में डुबोकर जल्दी-जल्दी उलट-पलट दें। कपड़ों में नील लगाने के पश्चात् कपड़ों को धूप में सुखाएँ।

वस्त्रों पर प्रेस करना

सूती वस्त्रों में कलफ व नील लगा कर सुखाने के बाद हम वस्त्रों को प्रेस करते हैं।

वस्त्रों पर प्रेस करने से लाभ

- वस्त्रों की सिलवटें दूर हो जाती हैं तथा वे समतल हो जाते हैं।
- वस्त्रों का आकर्षण व सुंदरता बढ़ जाती है।
- वस्त्रों पर चमक आ जाती है।
- कपड़ों की क्रीज बनी रहती है, जिससे व्यक्ति स्मार्ट दिखाई देता है।
- वस्त्र टिकाऊ हो जाते हैं।
- वस्त्र प्रेस करने से रोग के जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।

वस्त्र अनेक प्रकार के रेशों से बने होते हैं जो कि गुणों में भिन्न होते हैं। अतः इन पर प्रेस करते समय मुख्य तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए- ताप, दबाव तथा नमी का। इसे निम्नवत् प्रकार से समझा जा सकता है-

सूती वस्त्र - अधिक ताप, दबाव व नमी

रेशमी वस्त्र - कम ताप, दबाव व नमी

ऊनी वस्त्र - बहुत कम दबाव व ताप, अधिक नमी

सिंथेटिक वस्त्र - हल्का ताप व दबाव परंतु नमी नहीं

अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) मिलान करें-

अ	ब
सूती वस्त्र	कम ताप, दबाव व नमी।
रेशमी वस्त्र	अधिक ताप, दबाव व नमी।
ऊनी वस्त्र	हल्का ताप व दबाव नमी नहीं।
सिंथेटिक वस्त्र	बहुत कम दबाव व ताप, अधिक नमी।

(2). रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) ..... जल में वस्त्रों पर साबुन लगाने से झाग नहीं होता है।

(ख) प्रेस करने से कपड़ों की ..... दूर हो जाती है।

(ग) हल्दी का पुराना धब्बा ..... में भिगोने से छूट जाता है।

2. अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) जल कितने प्रकार के होते है ? नाम लिखिए।

(ख) पान के धब्बे किससे छुड़ाए जा सकते है ?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) वस्त्रों की धुलाई क्यों आवश्यक है ?

(ख) स्याही तथा रक्त के धब्बे छुड़ाने की विधि लिखिए।

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) कलफ कितने प्रकार के होते हैं ? वर्णन कीजिए।

(ख) मृदु एवं कठोर जल में कोई दो अंतर लिखिए। कठोर जल को मृदु जल कैसे बनाया जा सकता है ?

प्रोजेक्ट वर्क-

अपने घर में माँ की मदद से चावल व साबूदाने का कलफ बनाइए।